M. T. B. COLLEGE, SURAT
Manuscripts Library

No. Ref.
Ser. 1071

Title: Lakshami Vyankatesh Mahatmya

1071

Complete

Lakṣmī Vyaṅkaṭeśa Mantra

	:	:	: **Title**
	:	:	: Author
	:	:	: Editor
	:	:	: Year, Vols.
	:	:	: Publisher
1071	:	:	: Remarks

श्री।गणेशाय नमः॥ ननौ[illegible]मस
शांतं प्रसन्नं [illegible]वरप्रदं पिता॥ शिरसा
योगपीठस्थं भुक्ति मुक्ति च सिद्धये॥
१॥ ॐ अस्य श्री लक्ष्मी व्यंकटेश मंत्र स्त
त्रस्य॥ ब्रह्मा ऋषिः॥ त्रिष्टुप् छंदः॥ श्री
लक्ष्मी व्यंकटेशो देवता॥ ह्रीं बीजं॥
श्रीं शक्तिः॥ क्लीं कीलकं॥ मम लक्ष्मी
व्यंकटेश प्रसादार्थे जपे विनियोगः॥

अथ कर हृदयं न्यासः॥ ॐ अंगुष्टाभ्यां॰
हृदयाय नमः॥ श्रीं तर्जनिभ्यां॰ शिरसे
स्वाहा॥ ह्रीं मध्यमाभ्यां॰ शिखायै वषट्॥
नमो आनामिकाभ्यां॰ कवचाय हुं॥ ल
क्ष्मी कनिष्टिकाभ्यां॥ नेत्रत्रयायै व
षट्॥ व्यंकटेशाय करतलकरपृष्टाभ्यां
नमः॥ अस्त्राय फट्॥ भूर्भुवःस्वाहेति दि
ग्बंधः॥ अथ ध्यानं॥ उद्यदादित्य संकाशं
...वा संच... ... जं॥ ... रखचक्र

...यो लक्ष्मी ... [illegible] ... ने
ध्यारै संपूज्य॥ लमिति पंच पुजां कृत्वा॥ लक्ष्मी
मूलमंत्रं जपेत्॥ ॐ श्रीं ह्रीं नमो लक्ष्मीपति व्यंकटेशाय
अष्टोत्तरशतं वा सहस्रं जपेत्॥ उनरं
न्यासं कृत्वा॥ ध्यानं स्मरेत्॥

अथ तुलसीमंत्रः॥ तुलसी श्रीसखि शुभे मनो
हारिणि पुण्यदे॥ नमस्ते नारदनुते नाराय
णमनःप्रिये॥१॥